मौन होने दो

शब्द के संसार को अब मौन होने दो ।।

दीप जीवन का सजा हैं चाँदनी बन
ताप कै अहसास को कुछ सघन होने दो ।।
शब्द के संसार को अब मौन होने दो ।।

अथर की मुस्कान ऑखों की चमक को
सपन सा सुकुमार कोई बीज बोने दो ।।
शब्द के संसार को अब मौन होने दो ।।

प्रभाती आनन्द़ मोती हास़ नूपुऱ
जिन्दगी के हार में जम के पिरोने दो ।।
शब्द के संसार को अब मौन होने दो ।।

कडकती बिजली़ बरसती बादरी क़ो
शौर्य के संगान से अवसाद ख़ोने दो ।।
शब्द के संसार को अब मौन होने दो ।।